आलेख

महेन्द्र नारायण पंकज : साहित्य में जाति-विरोधी विमर्श का योद्धा

अत्यंत दुःख के साथ पाठकों को सूचित किया जाता है कि बहुजन साहित्यकार डॉ. महेंद्र नारायण पंकज का परिनिर्वाण 3 नवम्बर, 2024 रविवार सुबह 8:30 बजे उनके पैतृक आवास मधेपुरा में हो गया। हमें यह लेख इस दुःखद समाचार से कुछ ही दिनों पहले प्राप्त हुआ है। हम उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं- संपादक।

डॉ. अभय कुमार

चित्र : दि. डॉ. महेन्द्र नारायण पंकज (बायीं ओर), डॉ. अभय कुमार (दायीं ओर)

पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान से कुछ ही दूरी पर स्थित प्राथमिक शिक्षक संघ की इमारत ने 20 अक्टूबर, 2024 को 'जन लेखक संघ' के दूसरे बिहार राज्य सम्मेलन की मेजबानी की। इस पुरानी इमारत में प्रवेश करते ही मेरी मुलाकात एक बुजुर्ग व्यक्ति से हुई, जिनके अंदर एक युवा की ऊर्जा भरी हुई थी। 64 साल की उम्र में भी जन लेखक संघ के महासचिव महेंद्र नारायण पंकज पूरे जोश के साथ कार्यक्रम की अधिकांश गतिविधियों का समन्वय करते हुए नज़र आए।

इस सम्मेलन में देश के विभिन्न हिस्सों से आए लेखक, कवि और कार्यकर्ता मुख्यरूप से बहुजन समुदायों से थे। अधिकांश प्रतिभागी बिहार, पश्चिम बंगाल, झारखंड, उत्तर प्रदेश और हरियाणा से थे, जबकि कुछ लोग पड़ोसी देश नेपाल से भी शामिल हुए थे। पूरे दिन चले इस साहित्यिक समागम में बहस और चर्चाओं का मुख्य केंद्र बहुजन साहित्य की प्रासंगिकता और उसकी भूमिका पर रहा। दोपहर के सत्र में एक दर्जन कवियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं, और समापन सत्र में प्रमुख बहुजन नायकों, जैसे ज्योतिराव फुले और डॉ. बी. आर. आंबेडकर, के नाम पर साहित्यकारों को सम्मानित किया गया।

ऐसे आयोजनों की नियमित सफलता का श्रेय महेंद्र नारायण पंकज को जाता है, जिन्हें सभी प्यार से 'पंकज जी' के नाम से पुकारते हैं। पंकज जन लेखक संघ के संस्थापक और प्रमुख मार्गदर्शक हैं, जिन्होंने हाशिए के समुदायों से आने वाले लेखकों के लिए एक सशक्त मंच तैयार किया है। उनका दृढ़ विश्वास है कि बहुजन समुदाय तभी अपने अधिकार और समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकते हैं, जब वे ब्राह्मणवादी संस्कृति और उसके प्रभुत्व को खुलकर चुनौती दें। उनके लिए साहित्य और साहित्यिक मंच बहुजन चेतना को जागृत करने के सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं, जो सामाजिक असमानता, अंधविश्वास, और कुरीतियों से लड़ने में मदद करते हैं।

तबियत खराब होने के बावजूद, पंकज जन लेखक संघ की गतिविधियों में निरंतर सक्रिय रहते हैं। वे हमेशा बहुजन साहित्य से जुड़े सवालों का जवाब देने के लिए उपलब्ध रहते हैं। हालाँकि शुरुआत में उन्हें स्मार्टफोन चलाने में थोड़ी दिक्कत हुई थी, लेकिन उन्होंने जल्द ही इसका उपयोग करना सीख लिया। जन लेखक संघ को अकसर गंभीर वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन पंकज अपने निजी संसाधनों से इसकी मदद करने में पीछे नहीं हटते। वह अपनी पेंशन का एक बड़ा हिस्सा जन लेखक संघ की गतिविधियों को बनाए रखने में खर्च करने से भी नहीं हिचकिचाते। उनकी पूरी कोशिश रहती है कि चाहे कितनी भी चुनौतियाँ क्यों न आएं, यह मंच निरंतर फलता–फूलता रहे और अपने उद्देश्यों की ओर बढ़ता रहे।

महेंद्र नारायण पंकज के अथक प्रयासों के चलते, मंच अब 'जन आकांक्षा' नाम से एक वार्षिक हिंदी साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन करता है। अब तक इस पत्रिका के सात अंक प्रकाशित हो चुके हैं, जो दलित, आदिवासी, ओबीसी, और अल्पसंख्यक समुदायों के हाशिए पर पड़े लेखकों को एक सशक्त मंच प्रदान करती है। इस पत्रिका में कहानियाँ, कविताएँ और अन्य साहित्यिक रचनाएँ शामिल होती हैं, और इसकी सामग्री, संपादन,

प्रकाशन और वितरण की पूरी जिम्मेदारी पंकज जी के कंधों पर होती है।

सेमिनार हॉल में पंकज जी बड़ी सावधानी और निष्ठा के साथ अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते दिखाई देते हैं। एक पल में वे मंच से गतिविधियों का समन्वय कर रहे होते हैं, तो दूसरे ही पल दरवाजे पर खड़े होकर मेहमान कवियों और लेखकों का गर्मजोशी से स्वागत कर रहे होते हैं। वे मेहमानों से पूछते रहते हैं कि क्या उन्होंने भोजन किया है, और कभी–कभी तो वे स्वयं पानी लेकर सभा में मौजूद लोगों के पास जाते हैं, यह पूछते हुए कि कहीं किसी को प्यास तो नहीं लगी है।

दूसरों की सेवा में लगे रहने की धुन में वे खुद खाना–पीना तक भूल जाते हैं। जब थकान महसूस होती, तो पंकज सेमिनार हॉल की दीवार के पास रखी लकड़ी की चारपाई पर थोड़ी देर आराम कर लेते। उनके पास दवाइयों से भरा एक बड़ा बैग रखा रहता था। हाल ही में बीमार पड़ने के कारण उनका इलाज चल रहा था। मैं पंखे के नीचे, चारपाई के पास बैठा, तो उन्होंने बताया, 'अब मैं जल्दी थक जाता हूँ। यह मेरी बीमारी की वजह से है।' बातचीत के दौरान उन्होंने कुछ गोलियाँ खाईं और फिर पानी पिया।

पेशे से शिक्षक रहे पंकज को शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए बिहार सरकार ने सम्मानित किया है। शिक्षण के साथ–साथ साहित्य उनका सबसे बड़ा शौक और जुनून रहा है। पंकज कई किताबों के लेखक हैं, जिनमें 'एक युद्ध', 'क्रांतिवीर चंद्रशेखर आजाद की काव्य गाथा' और 'नूतन शब्दानुशासन' (हिंदी व्याकरण पर आधारित) शामिल हैं। वे साहित्य सिद्धांत की बहुजनवादी परंपरा में विश्वास रखते हैं और मुक्तिदायक साहित्य को असली साहित्य मानते हैं। ज्योतिराव फुले की शिक्षाओं से प्रेरित पंकज का मानना है कि शूद्रों और अतिशूद्रों पर ब्राह्मणवादी विचारधारा का प्रभुत्व रहा है। उनका कहना है कि जब तक बहुजन समुदायों में ब्राह्मणवादी–विरोधी चेतना का प्रसार नहीं होता, तब तक उत्पीड़न से उनकी मुक्ति संभव नहीं है। उनके अनुसार, बहुजन साहित्यिक मंच इस विमर्श को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म है।

1 जून, 1960 को बिहार के मधेपुरा जिले के भटनी गाँव में पंकज का जन्म हुआ। उनका संबंध ओबीसी समुदाय से है। छोटी उम्र से ही उन्होंने जाति आधारित भेदभाव का सामना किया। जैसे–जैसे वे बड़े हुए, उन्हें यह एहसास हुआ कि इस भेदभाव का सामना करने के लिए शिक्षा का प्रसार जरूरी है। कई चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा पूरी की और एक सरकारी स्कूल में शिक्षक का पद हासिल किया। एक शिक्षक के रूप में उन्हें सराहना मिली। पढ़ाई के अलावा लेखन के प्रति भी उनकी गहरी रुचि थी। उनका मानना है कि बहुजन चेतना को बढ़ावा देने के लिए शिक्षण के साथ–साथ साहित्यिक गतिविधियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार, स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों पर आधारित समाज के पुनर्निर्माण के लिए साहित्य एक आवश्यक साधन है।

बातचीत के दौरान, पंकज ने कहा कि 'बहुजन' समाज के वे बहुसंख्यक लोग हैं जो उत्पीड़न का शिकार हैं। उनके अनुसार, इस समूह में दलित, आदिवासी, पिछड़ी जातियाँ और अल्पसंख्यक शामिल हैं, जो अल्पसंख्यक उच्च जातियों द्वारा भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करते हैं। ये उच्च जातियाँ भौतिक संसाधनों पर नियंत्रण रखती हैं और धार्मिक, सांस्कृतिक तथा बौद्धिक गतिविधियों पर भी अपना प्रभुत्व बनाए रखती हैं। पंकज का मानना है कि इस शोषणकारी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए बहुजनों द्वारा संचालित साहित्यिक मंचों की स्थापना आवश्यक है, जो उत्पीड़ित बहुसंख्यकों के उत्थान के लिए कार्य करेंगे।

जब उनसे पूछा गया कि वे क्यों मानते हैं कि बहुजनों को अपने स्वयं के साहित्यिक मंच बनाने और चलाने चाहिए, तो पंकज ने अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि वे लंबे समय तक प्रगतिशील साहित्यिक मंचों से जुड़े रहे, लेकिन बाद में उन्हें यह महसूस हुआ कि तथाकथित प्रगतिशील लेखक जाति–आधारित ढांचे को समाप्त करने के लिए तैयार नहीं हैं, और न ही वे दलित, आदिवासी, ओबीसी, और अल्पसंख्यक समुदायों के लेखकों को पर्याप्त स्थान देने के इच्छुक हैं।

जन लेखक संघ के गठन की पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए, पंकज ने कहा कि वे चार साल तक 'जनवादी लेखक संघ' और 11 साल तक 'प्रगतिशील लेखक संघ' से जुड़े रहे। उन्होंने आरोप लगाया कि इन मंचों के प्रगतिशील होने के दावों के बावजूद, वे ब्राह्मणवादी मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाए हैं। उन्होंने कहा, "इन तथाकथित प्रगतिशील मंचों में भेदभावपूर्ण प्रथाएँ विद्यमान हैं। जातिवाद गहरे तक व्याप्त है, और डॉ. आंबेडकर द्वारा बताए गए भाईचारे के सिद्धांत का अभाव है। यही कारण है कि लोग धीरे–धीरे इन मंचों को छोड़कर बहुजन मंचों से जुड़ रहे हैं। आज बहुजन आंदोलनों ने महत्वपूर्ण प्रगति की है।"

उन्होंने आरोप लगाया कि जाति–आधारित भेदभाव कम्युनिस्ट पार्टियों में भी मौजूद है। 'ब्राह्मण लेखक इन साहित्यिक मंचों का नेतृत्व करते हैं और मनुवादी विचारधारा

का पालन करते हुए पार्टियों को संचालित करते हैं। कम्युनिस्ट पार्टियों के साहित्यिक मंच भी इन विकृतियों से अछूते नहीं हैं।' उदाहरण के तौर पर, पंकज ने प्रगतिशील लेखक संघ के एक राज्य सम्मेलन की एक घटना का जिक्र किया, जब बहुजन लेखकों को अपनी कविताएँ प्रस्तुत करने का अवसर नहीं दिया गया था। जब इस भेदभाव का कारण पूछा गया, तो उन्हें बताया गया कि इन मंचों पर केवल उच्च जाति के लेखकों को ही समय और स्थान दिया जाता है। पंकज ने डॉ. आंबेडकर का हवाला देते हुए कहा कि समानता की स्थापना के लिए जाति का विनाश आवश्यक है, लेकिन यह बात कम्युनिस्ट नेताओं ने स्वीकार नहीं की।

इन तथाकथित प्रगतिशील संगठनों में व्याप्त जातिवाद ने पंकज और उनके साथियों को निराश किया, जिसके कारण उन्होंने इनसे अलग होने का निर्णय लिया। इसके बाद, 10 जनवरी 2016 को नयी दिल्ली में आयोजित जन लेखक संघ के पहले राष्ट्रीय सम्मेलन में, उन्होंने 12 से 13 राज्यों के बहुजन लेखकों को आमंत्रित किया। अपनी स्थापना के बाद से जन लेखक संघ ने हाशिए पर पड़े लेखकों को अपनी आवाज उठाने का मंच प्रदान किया है। आज इस मंच का व्यापक विस्तार हो चुका है और 18 राज्यों में इसकी सक्रिय इकाइयाँ हैं।

जन लेखक संघ की विचारधारा का परिचय कराते हुए पंकज ने कहा, 'हम अपने मंच के माध्यम से मनुवादी विचारधारा को चुनौती देते हैं। हम स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों पर काम करते हैं और जनवादी साहित्यिक दृष्टिकोण अपनाते हैं। हमारा मार्ग बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दिखाए गए पथ पर आधारित है, और हम समानता पर आधारित समाज के निर्माण का प्रयास करते हैं।'

उन्होंने मार्क्सवादी साहित्य का अध्ययन किया, लेकिन जब उन्होंने डॉ. आंबेडकर के लेखन को पढ़ा, तो उन्हें महसूस हुआ कि भारतीय समाज की मुख्य समस्या जातिगत असमानता है। जाति को समाप्त किए बिना समाज में समानता लाना संभव नहीं है। इसी विचारधारा के तहत जन लेखक संघ ने डॉ. आंबेडकर के सिद्धांतों को अपनाया है।

बहुजन साहित्य को परिभाषित करते हुए पंकज ने इसे एक 'व्यापक' शब्द बताया, जिसमें दलितों, आदिवासियों और अल्पसंख्यकों सहित हाशिए पर खड़े समुदायों के संघर्ष शामिल हैं। बहुजन साहित्य इस बात पर जोर देता है कि समाज के हाशिए पर स्थित 85 प्रतिशत आबादी को यह समझना होगा कि संघर्ष के बिना सत्ता प्राप्त नहीं की जा सकती। सत्ता के अभाव में ये समुदाय गुलामी की स्थिति में बने रहते हैं। इसलिए, बहुजन आंदोलनों को सशक्त बनाना आवश्यक है ताकि लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें और उन्हें प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर सकें।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बहुजन साहित्य जीवन की कड़वी सच्चाइयों को उजागर करता है। यह वह साहित्य है जो भुखमरी और अमानवीय प्रथाओं के खिलाफ संघर्ष करता है। इसके विपरीत, ब्राह्मणवादी साहित्य विलासिता का साहित्य है। बहुजन साहित्य दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और अन्य हाशिए पर खड़े समूहों के दर्द, पीड़ा और संघर्ष को अभिव्यक्त करता है।

लंबे समय से चली आ रही इस बहस पर कि क्या गैर–बहुजन बहुजनों के दर्द को प्रामाणिकता से अभिव्यक्त कर सकते हैं, पंकज ने तर्क दिया कि केवल एक भूखा व्यक्ति ही भूख के दर्द को सही ढंग से व्यक्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि केवल बहुजन ही अपने दुःख के बारे में सही तरीके से लिख और बोल सकते हैं। दूसरी ओर, सवर्ण अपनी कोठियों में बैठकर बहुजनों के दर्द का कृत्रिम वर्णन करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह संभव नहीं है कि उच्च जाति के लेखक बहुजनों के वास्तविक दुख को सही ढंग से चित्रित कर सकें, क्योंकि उनके भीतर ब्राह्मणवादी मूल्यों की गहरी जड़ें होती हैं, जो हजारों वर्षों से स्थापित हैं, और इन मान्यताओं से स्वयं को मुक्त करना उनके लिए लगभग असंभव हो जाता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास पर विचार करते हुए, पंकज ने कहा कि प्रेमचंद के युग से पहले साहित्य मुख्य रूप से अभिजात्य वर्ग के मुद्दों पर केंद्रित था। उन्होंने प्रेमचंद को आम लोगों के संघर्षों पर ध्यान केंद्रित करने और साहित्य को जागरूकता बढ़ाने एवं सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में उपयोग करने का श्रेय दिया। इसी तरह, पंकज ने बताया कि बहुजन साहित्य का उद्देश्य भूख और असमानता के खिलाफ लड़ना और समाज में समानता को बढ़ावा देना है।

पिछले आठ वर्षों में, महेंद्र नारायण पंकज ने जन लेखक संघ के माध्यम से बहुजन एकता को सुदृढ़ करने के लिए अथक प्रयास किए हैं। मंच नियमित रूप से बैठकें आयोजित करता है और बहुजन लेखकों के बीच आशा का संचार करता है। मधेपुरा में स्थित अपने केंद्रीय कार्यालय के साथ, इस मंच का पंजीकरण हो चुका है और बड़ी संख्या में लोग इससे जुड़ रहे हैं।

□□

लेखक : स्वतंत्र पत्रकार और शिक्षक एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएचडी हैं।
ईमेल : debatingissues@gmail.com